ISSN:2583-8849

जांभोजी

1-

कवण न हूवा! कवण न होयसी? किण न सह्यो दुख भारूँ।
कवण न गइया कवण न जासी, कवन रह्या संसारूँ।
अनेक-अनेक चलंता दीठा, कलिका माणस कौण विचारूँ॥
जो चित होता सो चित नाहीं, भल खोटा संसारूँ।
किसकी माई किसका भाई, किसका पख परवारूँ॥
भूली दुनियां मर-मर जावै न चीन्हों करताऊं।
विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी! बल-बल बारंबारूँ॥
कसणीं कसवा भूल न बहवा, भाग परापति सारूँ।
गीता नाद कविता नाऊं, रंग फटा रस टारूँ॥
फोकट प्राणी भूरमे भूला, भलजे यों चीन्हों करतारूँ।
जामण मरण बिगावो चूकै, रतन काया ले पार पहुंचै तो
आवागवण निवारूँ॥

2-

सुण रे क़ाज़ी सुण रे मुल्ला, सुणियो लोग लुगाई।
नर निरहारी एकलवाई, जिन यो रा फरमाई॥
ज़ोर ज़बर करद जै छाड़ो, तो कलमा नाम ख़ुदाई।
जिनकै सांच सिदक इमान, सलामत, जिन यो भिस्त उपाई॥

3-

विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी, इस जीवन के होवै।
क्षण-क्षण आव घटंती जावै, मरण दिनेदिन आवै॥
पालटीयो घट कांय न चेत्यो, घाती रोल मनावै।
गुरु मुख मुरखा चढैं न पोहण, मन मुख भार उठावै॥
ज्यों-ज्यों लाज दुनी की लाजै, त्यूं-त्यूं दाब्यो दावै।
भलिया हो सो भली बुध आवै, बुरिया बुरी कमावै॥

4-

धवणा धूजै पाहण पूजै, वेफरमाई ख़ुदाई।
गुरू चेलै कै पाअ लागै, देखो! लोग अन्याई॥
काठी कणजो रूपा रैहण, कापड़ माँह छिपाई।
नीचा पड़-पड़ तानै धोकै, धीरो रे हरिआई॥
ब्राह्मण नाऊं लादण रूड़ा, बूता नाऊं कुता।
बै अपहानै पोह बतावैं, बैर जगावैं सुता॥
भूत परेती जाखा खाणी यह पाखंड पखाणो।
बल-बल कूकस कांय दलीजै, जामै कणु न दाणूं॥
तैल लीयो खल चोपै जोगी, खल पण सूंघी बिकाणो।
कालर बीज न बीज प्राणी थल सिर नकर निवांणो॥
नीर गये छीलर कांय सोधो, रीता रह्या इवाणी।
भवंता ते फिरंता-फिरंता ते भवंता, मड़े मसाणे तड़े तड़ंगे॥
पड़े पखांणे ह्यांतो सिद्ध न कोई निज पोह खोज पिराणी।
जे नर दावो छोड्यो मेर चुकाई, राह तेतीसां की जाणी॥

5-

काया कोट पवन कुटवाली, कुकर्म कुलफ बनायो।
माया जाल भरम का संकल, बहु जग रहीया छायो।
पढ़ बेद कुरांण कुमाया जालों, दंत कथा जग छायो॥
सिद्ध-साधक को एक मतो, जिन जीवत मुक्त दृढायो।
जुगां-जुगां को जोगी आयो, सत गुरु सिद्ध बतायो॥
सहज स्नानी केवल ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, सुकृत अहल्यो न
जाई।
क्यों-क्यों भणता क्यों-क्यों सुणता, समझ बिन कुछ सिद्धि
न पाई॥